The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 3 | Issue 3 | March 2025
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

गुरु अर्जुन देव जी की बाणी का सौंदर्यात्मक दृष्टिकोण

डॉ० संदीप कौर

सहायक प्रोफेसर, गुरु नानक अध्ययन विभाग, गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर।

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 27-03-2025

Published: 15-04-2025

Keywords:

सौंदर्यशास्त्र, भौतिक, बाणी, प्रकृति, संसार, गुरमुख

ABSTRACT

सिक्ख धर्म के पवित्र ग्रंथ श्री गुरु ग्रंथ साहिब में हमें सौंदर्यशास्त्र के अनेक रूप दिखाई देते हैं। सुंदरता सौंदर्यशास्त्र का आधार है, इसलिए गुरु साहिबान ने आदर्शक मानवीय सुंदरता पर चर्चा करते समय आंतरिक और बाहरी सुंदरता के बारे में भी बात की है। मनुष्य के अंतीव में आध्यात्मिक गुणों की सुंदरता होना आवश्यक माना जाता है क्योंकि आंतरिक आध्यात्मिकता का चित्रण बाहरी सुंदरता का मूल माना जाता है। शारीरिक सुंदरता को प्रकृति से देखा जा सकता है, जिससे विसमाद प्राप्त होता है। प्रकृति की असर्चजता का वर्णन गुरु अर्जुन देव जी की बाणी में आता है। गुरु साहिब की बाणी में प्रकृति में एक असर्चजता है जिसमें वे जानवरों, वनस्पति और प्राकृतिक विस्तार की प्रशंसा करके शारीरिक सुंदरता का वर्णन करते हैं। उन्होंने सृष्टि, इसके उद्देश्य और दैवी हुकम के माध्यम से शारीरिक सुंदरता को स्पष्ट किया है। गुरु अर्जुन देव जी की बाणी में, शारीरिक सुंदरता को ईश्वर द्वारा निर्मित की गई सृष्टि और उसके उद्देश्य के माध्यम से स्पष्ट किया गया है। सिख दर्शन, जब ईश्वर के अद्भुत रूप की बात करता है, तो आश्चर्य और विस्मय भावनाओं के माध्यम से सौंदर्य को व्यक्त

करता है। सौंदर्य की अभिव्यक्ति गुरु नानक देव जी की बाणी 'जपु जी' में संकलित पांच खंडों से ही प्रकट हो जाती है। पांचवे गुरु, गुरु अर्जुन देव जी अपनी बाणी में अपने पूर्वज गुरु साहिबान की बाणी का अनुसरण करते हैं, जिसके कारण उनकी बाणी से सौंदर्य आसानी से स्पष्ट हो जाता है।

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.15223210

सौंदर्यशास्त्र को दर्शनशास्त्र की एक शाखा के रूप में स्वीकार किया जाता है जिसमें व्यक्ति, वस्तु और मानव जीवन के अनुभवों के सौंदर्य की जांच की जाती है। यह ज्ञान उन वस्तुओं के बारे में होता है जो मनुष्य अपने जीवन के अनुभवों के दौरान अपने चारों ओर से अनुभव करता है। सौंदर्यशास्त्र का विभाजन शारीरिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक के रूप में किया जाता है।[1] प्रकृति और मानव कला को शारीरिक सौंदर्य के विषय माना जाता है जबकि बुद्धि और समाज के विषयों को बौद्धिक सौंदर्य के अंतर्गत माना जाता है। आध्यात्मिक सौंदर्य में; ईश्वर, आत्मा आदि के बारे में विचार होते हैं। आनंदवादी और रहस्यवादी विचारकों द्वारा यह भी कहा गया है कि सौंदर्यशास्त्र को शाब्दिक रूप से व्यक्त करना और इसे किसी भी प्रकार का आकार देना असंभव है। इन विचारकों द्वारा सौंदर्य को एक अकथनीय अवस्था का नाम दिया गया है। वास्तव में, सौंदर्य किसी भी वस्तु में वह गुण या विशेषता हो सकती है जो दर्शक पर प्रभाव डालती हो। दर्शन के अनुसार एस्थेटिक्स को रसिकता के दर्शन के रुप में भी स्वीकार किया जाता है। एस्थेटिसिज़्म से रसिकता का उदय होना ठीक उसी प्रकार है जिस प्रकार चेतना से उत्पन्न अनुभव होता है। रसिकता को मन की एक ऐसी विकसित शक्ति के रूप में माना जा सकता है जो कला या साहित्य के गुण की पहचान और अभिव्यक्ती कर सकती है।

सिक्ख धर्म के पवित्र ग्रंथ श्री गुरु ग्रंथ साहिब में हमें सौंदर्यशास्त्र के अनेक रूप दिखाई देते हैं। गुरु नानक देव जी ने अपनी बाणी में सुंदरता को समझाते हुए कहा है कि सुंदरता की समझ केवल विद्वानों के लिए नहीं, बल्कि हर मानव के लिए होनी चाहिए। वह व्यक्ति जिसे यह दृष्टि नहीं है, उसे मानव ही नहीं कहा जा सकता।[2] गुरु नानक देव जी ने जपु जी साहिब बाणी में सुंदरता के पांच खंड दिए हैं; इसे धर्म खंड, ज्ञान खंड, सर्म खंड, कर्म खंड और सचखंड के माध्यम से वर्णित किया गया है। धर्म खंड में से ऐसा भौतिक सौंदर्य प्राप्त होता है जिसमें प्रकृति और मानव कला का ज्ञान माना जाता है। मानव बुद्धि से उत्पन्न विश्व और विश्व से संबंधित विचार का अध्ययन ज्ञान खंड से प्राप्त होता है, जिससे बौद्धिक सौंदर्य हमारी दृष्टिगोचर होता है। सर्म खंड से, मानव अंतर्दृष्टि के क्षेत्र में ईश्वर, आत्मा और मोक्ष के विचार मिलते हैं। कर्म खंड को नैतिकता कहा जाता है और सचखंड को आध्यात्मिक

सौंदर्य कहा जाता है। इस प्रकार सौंदर्य को मुख्य रूप से तीन प्रकार के भौतिक सौंदर्य, बौद्धिक सौंदर्य और आध्यात्मिक सौंदर्य के रूप में माना जा सकता है।

भौतिक सौंदर्य में, प्रकृति, मन और मनुष्य के जीवन से संबंधित प्राकृतिक पदार्थों के सौंदर्य को देखा जाता है। सुंदरता सौंदर्यशास्त्र का आधार है, इसलिए गुरु साहिबान ने आदर्शहक मानवी सुंदरता पर चर्चा करते समय आंतरिक और बाहरी सुंदरता के बारे में भी बात की है। मनुष्य के अंतीव में आध्यात्मिक गुणों की सुंदरता होना आवश्यक माना जाता है क्योंकि आंतरिक आध्यात्मिकता का चित्रण बाहरी सुंदरता का मूल माना जाता है। शारीरिक सुंदरता को प्रकृति से देखा जा सकता है, जिससे विसमाद प्राप्त होता है। प्रकृति की असर्चजता का वर्णन गुरु अर्जुन देव जी की बाणी में आता है। गुरु साहिब की बाणी में प्रकृति में एक असर्चजता है जिसमें वे जानवरों, वनस्पति और प्राकृतिक विस्तार की प्रशंसा करके शारीरिक सुंदरता का वर्णन करते हैं। उन्होंने सृष्टि, इसके उद्देश्य और दैवी हुकम के माध्यम से शारीरिक सुंदरता को स्पष्ट किया है। गुरु अर्जुन देव जी की बाणी में, शारीरिक सुंदरता को ईश्वर द्वारा निर्मित की गई सृष्टि और उसके उद्देश्य के माध्यम से स्पष्ट किया गया है।

गुरु साहिब की बाणी में वनस्पति और ब्रह्मांड में कई प्रकार की अनमोल वस्तुऐं पृथ्वी, जल, अग्नि, बृक्ष, चंदन, नदियाँ, समुद्र, आकाश, तारे, चाँद, बादल और जीवों आदि की छवियाँ और चित्रण का उपयोग किया गया है, जिसके माध्यम से मानवीय जीवन को आध्यात्मिकता से जोड़ने के लिए प्रेरित किया गया है। गुरु अर्जुन देव जी की बाणी के भौतिक सौंदर्य में उस संसार के पदार्थो के आश्चर्य क्रम को दर्शाती है जिसे ईश्वर द्वारा निर्मित किया गया है और ईश्वर द्वारा पूरे ब्रह्मांड की संरचना की तकनीक की विशिष्टता और सांसारिक प्राणियों को प्रदान की गई विभिन्न प्रकार की सुविधाएँ भी गुरु साहिब की बाणी में व्यक्त की गई हैं। गुरु साहिब ने जीवों की ईश्वर पर निर्भरता को स्वीकार करते हुए चींटी के बिम्ब का उपयोग किया है ताकि यह स्पष्ट किया जा सके कि यदि ईश्वर की अपनी इच्छा है, तो वह एक छोटे जीव चींटी को इतना शक्तिशाली बना सकता है कि वह लाखों और करोड़ों मानवों की सेना को समाप्त करने में सक्षम हो सकती है, क्योंकि प्रकृति में प्रत्येक कार्य के लिए जीव ईश्वर पर निर्भर करते हैं। ईश्वर के मार्गदर्शन में, प्रत्येक जीवित प्राणी सक्रिय और मजबूत रहकर उसकी आज्ञा के तहत अपने कार्यों को करने में सक्षम है। चूंकि जीवन की निश्चितता ईश्वर की अपनी इच्छा के अनुसार है, प्रत्येक जीवित प्राणी भी ईश्वर द्वारा स्वयं संरक्षित है।[3]

सृष्टि के आश्चर्य को देखते हुए, गुरु साहिब ने अपनी बाणी में इसमें कई पदार्थों की विपरीत स्थितियों को भी वर्णित किया है। लकड़ी में आग होती है लेकिन इसके बावजूद, लकड़ी अपनी इच्छा के अनुसार आग से नहीं जलती। इसी प्रकार समुद्र के जल के रूप में पृथ्वी का अपना अस्तित्व भी हमेशा बना रहता है। इसी प्रकार हमारे दैनिक जीवन में दुःख पहले प्रकट होता है, जैसे मक्खन दूध में सम्मिलित तो रहता है लेकिन प्रकट बाद में होता है।

इसी प्रकार संसार में ईश्वर को मक्खन के रूप में पहले प्रकट माना जाता है, जबकि संसार बाद में दूध की तरह प्रकट होता है। बच्चे के लिए दूध एक माँ के भीतर के रक्त से ईश्वर के माध्यम से उत्पन्न होता है, और इसी प्रकार ईश्वर का अस्तित्व अनुभव किया जाता है। लेकिन उसे किसी भी रूप में आंखों से नहीं देखा जा सकता। उनके द्वारा एक दृश्य रूप वाले प्राणी का अस्तित्व समाप्त हो जाता है, जहां शरीर वाले जीव अदृश्य हो जाते हैं और शरीरहीन प्राणी दृश्य हो जाता है, क्योंकि प्रकृति में ये सभी अद्भुत कार्य ईश्वर की इच्छा के तहत सक्रिय हैं।[4] गुरु साहिब के अनुसार, सृष्टि की संरचना विभिन्न आकारों और ऋतुओं के अनुसार होने के कारण, इनमें से कोई भी एक-दूसरे के लिए किसी भी प्रकार की बाधा उत्पन्न नहीं करता क्योंकि इस पूरे ब्रहमांड में एकता का कानून ईश्वर द्वारा लागू किया गया है। मानव शरीर की संरचना के संबंध में कहा गया है कि मनुष्य एक निर्जीव मूर्ति है जो मिट्टी से बनाई गई है और इसमें जो दृष्टि है वह भी ईश्वर द्वारा प्राप्त होती है। चूंकि ईश्वर अपने सृजन से प्रेम करते हैं और उनकी देखभाल करते हैं, वह पूरे ब्रहमांड के जीवों को हर अच्छी वस्तु प्रदान करते हैं। इसके अतिरिक्त संसार के सभी आनंद, नाटकीय दृश्य भी ईश्वर के अधीन हैं और संसार में अनेक प्रकार की जो भी घटनाएँ घटित होती है, वो भी ईश्वर की इच्छा के अधीन होती है।[5]

गुरु अर्जुन देव जी ने संसार की नश्वरता के अविच्छेद्य सत्य को व्यक्त करने के लिए एक भौतिक पदार्थ रेत के घर को उदाहरण के रूप में उपयोग किया है, जिसमें जीवित प्राणियों के जीवन काल की निश्चितता निर्धारित समय के बाद रेत के टुकड़ों की तरह तैरते हुए समाप्त मानी जाती है। वास्तव में रेत एक ऐसा पदार्थ है जिसमें अपने मूल अस्तित्व को किसी भी आकार में लंबे समय तक स्थिर रखना असंभव होता है, जिसके कारण इससे निर्मित प्रत्येक वस्तु का अस्तित्व अस्थिर होता है क्योंकि इसका अस्तित्व लंबे समय तक कायम नहीं रह सकता है।[6] मानवीय शरीर नाशवान है, किन्तु जैसे-जैसे मनुष्य वृद्धावस्था में प्रवेश करता है, उसकी शारीरिक शक्ति में कमी की स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है, सांसारिक पदार्थों के प्रति मनुष्य की आसक्ति और आकर्षण की तीव्रता अधिक होती जाती है। मानवीय जीवन की तुलना घर में आने वाले मेहमान से की गई है, जिसके आने का समय तो निश्चित होता है और वह एक निश्चित अवधि के बाद घर छोड़ने की ठान लेता है। परंतू मनुष्य की मृत्यु के समय में किसी भी प्रकार का कोई भी परिवर्तन संभव नहीं हो सकता है।[7]

गुरु साहिब ने पशुयों की प्रवृति का उपयोग एक उदाहरण के रूप में किया है ताकि यह व्यक्त किया जा सके कि मनुष्य की लालच के तहत जीने की प्रवृत्ति ऐसी है, कि वह अपने सामने पड़े पत्तों को खाकर अपने पेट को भरने के लिए लालच करते हैं। इस असंतोषजनक स्वभाव के कारण, जब भी पशुयों को अवसर मिलता है, वह निरंतर लालच के प्रभाव के अधीन हरे चारे तक पहुँचने की कोशिश करते हैं। इसी प्रकार की स्थिति मनुष्य की होती है जो मायावी पदार्थों के लिए लालच में जीता है। ऐसी स्थिति में मनुष्य कुछ भी सोचने और समझने में असमर्थ होता है। मानव

अस्तित्व की वास्तविकता को प्रकट करने के लिए मनुष्य, संसार में रहते हुए, अपने-आप को अन्य मनुष्यों से ऊँचा और श्रेष्ठ दिखाने के लिए विभिन्न ढंगों को अपनाता है और कई रंगों के कपड़े पहनता है। ऐसी स्थिति में, अन्य मनुष्य ऐसे व्यक्ति से दूर रहते हैं, जो लालच की प्रवृत्ति वाला होता है, क्योंकि ऐसे व्यक्ति की स्थिति ठीक उसी प्रकार की होती है जैसी खेत में पक्षियों को डरने के भय की होती है। इस डर के वास्तविक और दिखावे वाले अस्तित्व के बीच एक बड़ा अंतर है। सामान्य और दिखावटी लोभी व्यक्ति के अस्तित्व की वास्तविकता के साथ भी यही होता है।[8]

मनुष्य की सांसारिक आकर्षण की वस्तुओं के दृश्य से प्रभावित स्थिति की अस्थिरता को कुसंभ के फूल से तुलना की गई है, जो अपनी उपस्थिति और सुंदरता के कारण सभी को प्रभावित करता है, लेकिन इस फूल का अस्तित्व दो से तीन दिनों के भीतर ही समाप्त हो जाता है और इसका चमकदार रंग इसके सूखने के पश्चात काला हो जाता है। इसी प्रकार मनुष्य के लिए, संसार में प्रभाव डालने वाली वस्तुएं उसे केवल कुछ समय तक प्रसन्न करती हैं, जबकि मनुष्य के वास्तविक आनंद का कारण वह साधन होते है जो उसको ईश्वर की प्राप्ती में सहायक होते हैं।[9] गुरु साहिब ने अपनी बाणी में मनमुख मनुष्य के जीवन की स्थिति को प्रकट करने के लिए कई जीवों द्वारा की जाने वाली क्रियायों से तुलना की है। जैसे गंदगी सदैव ही कौवे की चोंच को प्रभावित करती है, उसी प्रकार ही मनुष्य के मुख्य की स्थिति हमेशा दूसरों की निंदा करने में रहती है। काम की प्रवृत्ति के अधीन मनुष्य द्वारा किए गए कार्यों की स्थिति को कुत्ते की जीवन स्थिति के समान माना गया है। ईश्वर की भक्ति के बगैर जीने वाले व्यक्ति की तुलना उस गधे से की गई है जो हमेशा राख या मिट्टी में लेट कर प्रसन्न रहता है। वह उन पदार्थों से दूरी नहीं रखता जो शरीर को प्रदूषित करते हैं। नाम-सिमरन के बिना मनुष्य की स्थिति उस कुत्ते के जैसी होती है जो दूसरों का भी अपने स्वभाव के कारण नुकसान कर सकता है क्योंकि किसी भी मानवी गुण का प्रभाव बहुत आसानी से दूसरे मनुष्य पर पड़ता है। लालची व्यक्ति की स्थिति ऐसी होती है कि वह अपनी प्रवृत्ति के कारण मायावी पदार्थों को इकट्ठा करते समय न तो थकता है और न ही संतुष्ट होता है, बल्कि वह अन्य प्राणियों को भी इन पदार्थों के लालच का शिकार बनाता है। ईश्वर की भक्ति से विहीन मनुष्य की जीवन स्थिति की एक हानिकारक प्राणी जैसे साँप से भी तुलना की गई है, जिसकी जीवन अवधी बहुत लंबी माना गया है। लेकिन वह अपने पूरे जीवन में दूसरों को अपने विषैले डंक से काटता है और हमेशा किसी को लाभ देने के बजाय हानि ही पहुँचाता है।[10]

एक व्यक्ति द्वारा संत स्वरूप गुरमुखों की निंदा करके बुराई करने की स्थिति को उसी कौवे के समान माना जाता है जो लगातार ऊँची और अस्वस्थ ध्वनि में बोलता है। ऐसे अपशब्दों वाले व्यक्ति की आत्मा को अनेक प्रकार के छोटे जीवों जैसे सांप, पक्षियों एवं कीड़ों आदि के रूप में वर्णित किया गया है। आत्मा की इस स्थिति के दौरान, उसकी गति का चक्र निरंतर चलता रहता है।[11] गुरु अर्जुन देव जी ने सांपों के साथ रहने की स्थिति के साथ इस

प्रकार की संगति प्रस्तुत की है ताकि यौन विकारों के तहत मानवों की स्थिति का वर्णन किया जा सके। जो अत्यंत भयानक है क्योंकि साँपों की प्रवृति स्वाभाविक रूप से इस प्रकार की होती है कि वे किसी भी समय अपने डंक से किसी को भी मार सकते हैं। इसी प्रकार यौन विकारों का भी मामला है क्योंकि वे भी किसी भी समय जीवित प्राणी को भटकने वाला डंक दे सकते हैं और उनके माध्यम से कई जीवों का जीवन भी नष्ट हो चुका है क्योंकि मनुष्य उनके अधीन रहकर अपने जीवन के अंतिम उद्देश्य प्राप्त नहीं कर सकता।[12]

बगुला और हंस की तुलनात्मक स्थिति को भी गुरू साहिब ने अपनी बाणी में प्रस्तुत किया है ताकि मन-केन्द्रित व्यक्ति की जीवन स्थिति के बारे में स्पष्टता से बताया जा सके। यह भी स्वीकार किया गया है कि बगुला कभी भी हंस नहीं बन सकता क्योंकि हंसों के बीच बैठने के बावजूद, वह हमेशा अपनी प्रवृति के अनुसार मछली पकड़ने के लिए उत्सुक रहता है। वास्तविकता यह है कि चील अपनी प्रवृति को छोड़ नहीं सकती क्योंकि यह एक प्राकृतिक घटना है कि किसी भी जीव के लिए उसकी लालची प्रवृत्ति जिस भी वस्तु के लिए होती है उसके लिए उसे छोड़ना अत्यंत कठिन होता है। अब, क्योंकि हंसों की विशेषता मोती चुनना है और इस प्रवृत्ति के तहत उन्हें कीड़ों में कोई रुचि नहीं होती। जब हंसों द्वारा विचार किया जाता है, तो वे इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि उनका संयोजन बगुलों के साथ अच्छा नहीं लगता क्योंकि हंसों का आहार हीरे, मोती खोजना है और बगुला का आहार मेंढक खोजना है। अंत में बगुला हंसों के डर से उनकों छोड़कर उड़ जाता है, यह सोचते हुए कि कहीं उसका यह रहस्य हंसों के सामने प्रकट न हो जाए।[13] गुरु साहिब ने दोषों के प्रभाव में रहने वाले मनुष्य की स्थिति की तुलना उस मक्खी की प्रकृति से की है जो हमेशा गंदगी पर बैठना पसंद करती है। मनुष्य के मन के साथ भी ऐसा ही है जो बुराइयों के प्रभाव में अपनी जिंदगी बिताने में अच्छा महसूस करता है।[14] दूध न देने वाली गाय का उपयोग एक आदमी के अस्तित्व को निरर्थक बताने के लिए एक प्रतीक के रूप में किया गया है, जिसकी गुणवत्ता को दूध देने वाली माना जाता है और संसार में गाय को भी इसी उद्देश्य के लिए रखकर उसका पालन किया जाता है। लेकिन अगर गाय में मुख्य गुणवत्ता दूध देने वाली नहीं है, तो ऐसी स्थिति में गाय का कोई महत्व नहीं रह जाता है।[15] गुरु साहिब ने विनम्रता की गुणवत्ता को व्यक्त करने के लिए चंदन, नीम और बांस के पेड़ों की छवियों का भी उपयोग किया है। गुरु साहिब ने यह भी स्पष्ट रूप में बताया है कि उसकी विनम्रता की प्रकृति के कारण चंदन के वृक्ष के पास नीम के पेड़ की कड़वाहट भी कम हो जाती है, जबकि बांस का पेड़ अपनी ऊंचाई के कारण इस गुणवत्ता को प्राप्त नहीं कर पाता। विनम्रता की गुणवत्ता से रहित मनुष्य के साथ भी यही स्थिति होती है, क्योंकि वह अपने अहंकारी स्वभाव के तहत किसी और से किसी प्रकार की अच्छी गुणवत्ता प्राप्त करने का प्रयास भी नहीं कर सकता।[16]

सिक्ख दर्शन में मनुष्य द्वारा अपने चरित्र में ज्ञान और नैतिकता के गुणों को अनुकूलित करने को ही बौद्धिक सुंदरता माना जाता है, जो सक्षम मार्गदर्शन के तहत मनुष्य द्वारा प्राप्त किए जा सकते हैं। प्रकृति के

अनेक रहस्यों में अंतर्दृष्टि एक बौद्धिक दृष्टिकोण के माध्यम से प्राप्त की जा सकती है। यह मानवी जीवन का ऐसा स्तर है जहां अच्छे गुण मनुष्य के व्यक्तित्व में प्रकट होते हैं। मनुष्य द्वारा अपने जीवन में गुरु, गुरु के शब्द, नाम सिमरन आदि के माध्यम से उचित मार्गदर्शन को प्राप्त किया जा सकता है। मनुष्य के जीवन में अपने उच्चतम उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए किए जाने वाले कई प्रकार के कर्म-कांडों की निरर्थक स्थिति को भी स्पष्ट किया गया है। गुरु अर्जुन देव जी ने अपनी बाणी में कमल के फूल के बिम्ब द्वारा ब्रह्म ज्ञानी (गुरमुख) के जीवन की मासूमियत को दर्शाया है जो कीचड़ में पैदा होने और उसमें रहने के बावजूद अपनी सुंदरता और स्वच्छता को बनाए रखते हुए कीचड़ की गंदगी के प्रभाव से मुक्त रहता है। ब्रह्म ज्ञानी के चरित्र की स्वच्छता में, पापी प्रवृत्तियाँ उसी प्रकार समाप्त हो जाती हैं जैसे सभी चीजों में नमी का अस्तित्व सूर्य द्वारा अपनी तीव्रता के माध्यम से पूरी तरह से समाप्त कर दिया जाता है। ब्रह्म ज्ञानी की दृष्टि सभी के लिए ऐसी है कि राजा और कंगाल व्यक्ति के लिए वायु का स्पर्श एक समान होता है। ब्रह्म ज्ञानी की सहनशीलता की तुलना पृथ्वी से की गई है, जिसका उपयोग हर कोई अपनी इच्छा और आवश्यकता के अनुसार करता है। जैसे एक मनुष्य द्वारा पृथ्वी को खोदा जाता है और दूसरे द्वारा चंदन से लेपित किया जाता है। लेकिन ऐसे कार्यों के माध्यम से, पृथ्वी की किसी भी प्रकार की प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं होती। ब्रह्म ज्ञानी की प्रकृति बिल्कुल उसी प्रकार की होती है जैसे आग की प्रकृति सभी को शुद्ध करना है। जो मनुष्य दिव्य ज्ञान प्राप्त करता है उसकी पवित्रता पानी के समान मानी जाती है, जिसके ऊपर किसी भी प्रकार की गंदगी का चिपकना असंभव होता है। ऐसे मनुष्य के मन में भरातरीभाव की ऐसी भावना उत्पन्न होती है कि वह मित्र और शत्रु के बीच किसी भी प्रकार का अंतर अनुभव नहीं करता और ना ही उसमें अहंकार का कोई भाव होता है।[17]

गुरु अर्जुन देव जी की बाणी में, जहाँ मनुष्य के शरीर की संरचना, अस्तित्व आदि का उल्लेख है, वहीं मनुष्य को अपने शारीरिक अंगों का उचित उपयोग करने के लिए भी प्रेरित किया गया है। गुरु साहिब ने ईश्वर को प्राप्त करने के उद्देश्य से मानवीय शरीर के अंगों के विवेकपूर्ण उपयोग की व्याख्या की है। ऐसे उद्देश्य को पूरा करने के लिए, मनुष्य को अपनी जीभ से ईश्वर का नाम स्मरण करने, अनुभवित संतों के प्रति अपने मस्तिष्क झुकाने, और अपने पैरों के माध्यम से ईश्वर की प्राप्ति के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित किया गया है। मनुष्य के मन के साथ, मोक्ष प्राप्त करने के लिए शारीरिक अंगों का समर्थन अत्यंत महत्त्वपूर्ण होता है। मनुष्य के माथे का संतों के प्रति झुकना विनम्रता का प्रतीक माना गया है और ईश्वर के मार्ग की ओर पैरों का चलना सही ज्ञान की प्राप्ति का प्रतीक है।[18] गुरु साहिब ने मनुष्य के शरीर के विभिन्न अंगों के उपयोग को अंतिम लक्ष्य प्राप्त करने के लिए समझाते हुए उसके माथे को एक ऐसे अंग के रूप में स्वीकार किया है जिसमें मनुष्य के व्यक्तित्व में विनम्रता की गुणवत्ता होती है, जो ईश्वर की आज्ञा को स्वीकार करने के लिए झुका होता है। मनुष्य की जीभ का उपयोग ईश्वर के नाम की प्रशंसा करने के लिए किया जाता है। मानवीय आंखें अच्छे और बुरे भावनाओं को पहचानने के साथ-साथ ईश्वर को

देखने में भी सक्षम होती हैं। जो मनुष्य अपने शारीरिक अंगों का सही उपयोग करके ईश्वर के प्रति प्रेम की भावना विकसित करते हैं, वे दूसरों से श्रेष्ठ होते हैं, क्योंकि वे अपने जीवन के वास्तविक उद्देश्य को पूरा करने के लिए प्रयासरत रहते हैं।[19]

गुरु साहिब ने मानवीय जीवन में गुणों की अभिव्यक्ति को महत्वपूर्ण माना है और इसलिए अपनी बाणी में उन्होंने संसार में से कई अटल (वास्तविक) सत्य प्रस्तुत किए हैं, जो इन गुणों का प्रतिनिधित्व करते हैं। सत्य के महत्व को प्रदर्शित करने के लिए लोकोक्तियों का उपयोग करते हुए, यह भी स्पष्ट रूप से स्वीकार किया गया है कि जो मनुष्य सत्य के मार्ग पर खड़े होते हैं, वह समस्त विश्व की महिमा के योग्य होते हैं।[20] मनुष्य को गुरु की प्राप्ति के लिए ठीक उसी प्रकार की जिज्ञासा विकसित करने के लिए प्रेरित किया गया है जैसे हिरण नाद (ध्वनि) के प्रति करता है। वह रात में नाद की ध्वनि सुनकर अपने मन से उस ध्वनि के प्रति पूरी तरह समर्पित रहता है। विद्वानों द्वारा नाद को ध्वनि के रूप में माना गया है, जिसकी ध्वनि घंटी और नगाड़े की आवाज़ से आती है। हिरण इस घंटे की ध्वनि के प्रति इतना आकर्षित होता है कि वह शिकारी द्वारा उसके लिए बिछाए गए जाल के प्रति भी अनजान हो जाता है और उसे अपने प्राणों की भी परवाह नहीं होती है।[21]

गुरु अर्जुन देव जी की बाणी में, पक्षियों में से कौवों की स्थिति को प्रस्तुत करते हुए, यह बताया गया है कि ईश्वर के नाम के बिना जीवों की स्थिति बिल्कुल वैसी ही है जैसे कौवा प्रत्येक व्यक्तित्वहीन घर में बोलता है और उसे ऐसे घर में से कुछ खाने को नहीं मिलता। उसकी आवाज़ सुनने वाला कोई नहीं होता, जिससे उसकी बात का कोई महत्व ही नहीं रहता। इसी प्रकार नाम से विहीन जीव की सहायता की पुकार को कोई नहीं सुन सकता क्योंकि वह अकेले रह जाता है।[22] ईशवर पच्छात मनुष्य के मन की स्थिति को स्पष्ट करने के लिए, पक्षियों की प्रजाति से इल की प्रवृति का उल्लेख किया गया है कि जिस प्रकार वह दस दिशाओं में उड़ती है, पहाड़ों, पेड़ों और वृक्षों में, जहाँ भी एक मृत व्यक्ति दिखाई देता है, वह वहाँ आकर बैठ जाती है और सब कुछ भूल जाती है। मानवीय मन भी ठीक इसी प्रकार है जो वासना के प्रति उत्तेजित रहता है।[23]

गुरु साहिब ने नाम-सिमरन से विहीन मनुष्य की स्थिति को हाथी के स्नान करने के रूप में वर्णित किया है क्योंकि हाथी की प्रकृति ऐसी होती है कि वह स्नान करने के पच्छात फिर से कीचड़ में चला जाता है और उसे अपने ऊपर डाल लेता है, जिससे उसका स्नान व्यर्थ हो जाता है। क्योंकि ऐसा करना उसके ज्ञान के अनुसार उचित है। मनुष्य के साथ भी यही स्थिति है कि वह सफेद और साफ कपड़े पहनकर और इत्र आदि से सुगंधित होकर खुद को सुंदर रख सकता है, लेकिन ईश्वर के नाम को याद किए बिना, ये सभी प्रकार से महत्वहीन है। अब, मनुष्य की अधूरी समझ के अनुसार, उसे बुराइयों में रुचि रखना अच्छा लगता है। ऐसी प्रवृत्ति वाले व्यक्ति के लिए केवल ईश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण के परिणामस्वरूप आना ही संभव है।[24] गुरु साहिब ने अपनी बाणी में नाम सिमरन के महत्व के

लिए कई उदाहरणों का उपयोग करते हुए ईश्वर के नाम को ऐसे सहायक के रूप में स्वीकार किया है जो मनुष्य को अत्यधिक कठिनाई की स्थिति में मदद करता है। नाम सिमरन के महत्व को डूबती नाव, बुझते दीपक के लिए तेल, जलती आग के लिए पानी और भूख से पीड़ित बच्चे की स्थिति को दूध प्राप्त करने के संदर्भ में समझाया गया है। ईश्वर का नाम मनुष्य के लिए उसी प्रकार सहायक होता है जैसे युद्ध में भाई, भूखे के लिए भोजन, बादल वाली बारिश कृषि के लिए लाभकारी होती है। नाम सिमरन के माध्यम से, मानव निर्भाउ की स्थिति में रहता है जैसे कि जो गरुड़ मंत्र का जाप करता है वह सांप के डर से मुक्त होता है। पिंजरे में बैठा तोता, जो ऐसी स्थिति में बिल्ली द्वारा शिकार नहीं बनाया जा सकता और चक्की के किले से चिपके अनाज के बीज जो पीसने से बच जाते हैं। ऐसे कई उदाहरण दिए जा सकते हैं, जिनके माध्यम से नाम सिमरन के महत्व को समझा जा सकता है।[25]

सौंदर्यशास्त्र का अंतिम चरण आध्यात्मिक सौंदर्यशास्त्र माना जाता है, जिसमें ईश्वर, आत्मा और जीवन की स्वतंत्रता से संबंधित विषयों की सुंदरता देखी जाती है। इन विषयों का स्थान भौतिक और बौद्धिक सौंदर्य के विषयों से ऊपर है। गुरबाणी में ईश्वर की उस्तति करते हुए उन्हें गुणों का खजाना कहा गया है। आध्यात्मिक सौंदर्य का उपयोग मनुष्य अपने जीवन के मुख्य उद्देश्य के रूप में अपनाकर समस्त विश्व के कल्याण के लिए कर सकता है। गुरु अर्जुन देव जी ने ईश्वर की अनंतता को अद्भुत मानते हुए उसको निराकार, अनंत गुणों से युक्त, सर्वोच्च के रूप में वर्णित किया है। उस जैसा कोई और नहीं हो सकता। वह जन्महीन और अद्भुत रूप का हैं, उनके हाथ में कोई संख्या, चक्र, गदा नहीं है, जिसके माध्यम से यह निर्धारित किया जा सकता है कि ईश्वर अस्तित्व क्या है। ईश्वर का कोई रंग नहीं है, जो आमतौर पर एक अवतार की पूर्व-निर्धारित पहचान होती है।[26] गुरु जी की बाणी में, ईश्वर को पानी के ऐसे समुद्र के रूप में प्रस्तुत किया गया है जिसमें जीवित मछली जीवों के अस्तित्व को व्यक्त करती है। नाम-सिमरन के महत्व को स्पष्ट करने के लिए ईश्वर के नाम को एक हीरे के समान बताया गया है, जो प्रत्येक जीवित प्राणी के अंदर ईश्वर द्वारा छिपा कर रखा गया है और मनुष्य इसको गुरु के मार्गदर्शन के माध्यम से अपने भीतर से इस नाम के हीरे को खोज सकता है।[27]

गुरु साहिब के अनुसार जब एक व्यक्ति साध-संगति में ईश्वर के नाम को एक साथ याद करता है, तो वह सभी सांसारिक प्राणियों में ईश्वर की एक ही ज्योति की व्यापकता को देखता है और ईश्वर का नाम, जो आध्यात्मिक जीवन देता है, उसके भीतर प्रकट होता है। जिसके माध्यम से मानव जीवन के सभी दुःख समाप्त हो जाते हैं। मनुष्य ईश्वर के गुणों की प्रशंसा करते हुए, अपने भीतर अहंकार के प्रभाव को भी समाप्त करता है। ऐसे समय में, मानवीय मन में ईश्वर के प्रेम का रंग उसी प्रकार आता है जैसे कि मजीठ का रंग, जो कि बहुत पक्का होता है तथा यह कभी कच्चे रंग की तरह नहीं उतरता।[28] गुरु साहिब ने ईश्वर को एक पेड़ के रूप में प्रस्तुत किया है, जिससे कई शाखाएँ उत्पन्न और विकसित होती रहती हैं। इसी प्रकार संसार के समस्त प्राणियों की उत्पति ईश्वर के

अस्तित्व से हुई है। ईश्वर की एकता के अनुसार वह स्वयं एक माला के धागे के रूप में हैं और संसार में जीव उस धागे में मोती के समान होते हैं जिनसे एक माला निर्मित होती हैं। ईश्वर स्वयं इस धागे की गांठ भी हैं और हाथ में आने वाला मुख्य मोती होती हैं जो सभी का मार्गदर्शन करती हैं।[29]

गुरबाणी में सुनारों द्वारा सोने के धातु से बनाए गए कई प्रकार के आभूषणों का अस्तित्व और उनके मूल पदार्थ सोने में फिर से परिवर्तित होने की स्थिति का वर्णन भी किया गया है, जो सृष्टि और उसके स्रष्टा की स्थिति को व्यक्त करता है। यह सृष्टि की अस्थिरता की वास्तविकता के सोने के साथ एकीकृत होने की सच्चाई का भी उल्लेख करता है, जो उनका मूल पदार्थ है।[30] गुरु अर्जुन देव जी ने ईश्वर के भक्त की उस पर निर्भरता को वर्णित करने के लिए चंद्रमा और चकोर के प्रतीक का उपयोग भी किया है कि जिस प्रकार चकोर की चंद्रमा को देखने की जिज्ञासा बनी रहती है, उसी प्रकार ईश्वर के भक्त के लिए ईश्वर का अनुभव करने के लिए जिज्ञासु की दृष्टि होती है।[31] गुरबाणी में मन को ईश्वर के प्रति प्रेम की एक स्थिति बताने के लिए प्रेरित किया गया है, जैसे पानी और दूध। जब दूध को गर्म करने के लिए आग पर रखा जाता है, तब उस समय तक पानी दूध में मौजूद रहता है। यह पानी दूध को जलने नहीं देता और अंततः दूध के अस्तित्व को बचाने के लिए अपने अस्तित्व को समाप्त कर देता है। इसी प्रकार कमल के फूल और भौंरे की स्थिति है, जिसमें भौरा खिलते हुए कमल के फूल की सुगंध में इतना डूब जाता है कि वह कमल के फूल की पंखुड़ियों में फंसकर मर जाता है, लेकिन वह एक पल के लिए भी फूल की सुगंध को उससे दूर जाने नहीं देता।[32]

गुरु साहिब के अनुसार ईश्वर के प्रति प्रेम रखने वाले व्यक्ति की स्थिति के समय ही व्यक्ति का विश्वास उसमें मजबूत हो जाता है। ऐसे समय में ईश्वर के मनुष्य को मुक्ति दिलाने में सहायक होने की स्थिति को तुल्हा और नाव के महत्व के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। जैसे एक नाव और तुल्हा (लकड़ी का एक बंडल जिसका उपयोग नदी के किनारे रहने वाले लोग नदी के माध्यम से इधर से उधर जाने के लिए करते हैं) समुद्र या पानी के पार जाने के महत्वपूर्ण साधन हैं, उसी प्रकार ईश्वर मनुष्य के लिए सहायक साबित होते हैं।[33] ईश्वर के नाम से जुड़े मानवीय मन की स्थिति को एक छोटे बच्चे के दूध के प्रति उत्पन्न आकर्षण की स्थिति से तुलना करके प्रस्तुत किया गया है। एक बच्चे की मानसिकता ऐसी होती है कि उसे दूध के अतिरिक्त कोई अन्य वस्तु या खेल उसे प्रभावित नहीं कर सकता क्योंकि उसकी रुचि केवल दूध में होती है।[34] गुरु साहिब ने लाल रंग के कभी गंदा न होने की विशेषता को प्रस्तुत करते हुए इसे एक ऐसे प्राणी के संकेतक के रूप में उपयोग किया है, जो गुरु के मार्गदर्शन में चलते हुए ईश्वर के साथ एकता की स्थिति प्राप्त करता है और यह भी माना जाता है कि लाल रंग प्रेम का रंग है और विवाहित महिला जो अपने पति के साथ रहती है, द्वारा पहना जाता है। सामान्यतः, एक सुहागन महिला के क्षृंगार की सभी सामग्रियों का रंग भी लाल होता है।[35]

इस लिए सौंदर्य एक ऐसा सूक्ष्म विषय है, जिसे किसी निश्चित सीमा के भीतर रखकर उस पर विचार नहीं किया जा सकता। प्रत्येक मनुष्य का सुंदरता के प्रति एक विभिन्न दृष्टिकोण होता है, क्योंकि अपनी बुद्धि के अनुसार, प्रत्येक मनुष्य बाणी या किसी अन्य रचना से सौंदर्य का अनुभव कर सकता है। यही कारण है कि इसकी परिभाषा और स्वभाव के बारे में विद्वानों के बीच निरंतर बहस होती रहती है। सिख दर्शन जब ईश्वर के अद्भुत रूप की बात करता है तो आश्चर्य और विस्मय भावनाओं के माध्यम से सौंदर्य को व्यक्त करता है। सौंदर्य की अभिव्यक्ति गुरु नानक देव जी की बाणी 'जपु जी' में संकलित पांच खंडों (धर्म खंड, ज्ञान खंड, सर्म खंड, कर्म खंड एवं सच खंड) से ही प्रकट हो जाती है। पांचवे गुरु गुरु अर्जुन देव जी अपनी बाणी में अपने पूर्वज गुरु साहिबान की बाणी का अनुसरण करते हैं जिसके कारण उनकी बाणी से सौंदर्य आसानी से स्पष्ट हो जाता है।

संदर्भ

1. प्रिं. राम सिंह, गुरु नानक बाणी का सुहज शास्त्र, सिंघ ब्रदर्स, अमृतसर, 1968, पृष्ठ 13
2. इकना नाद न बेद न गीअ रसु रस कस न जाणंति॥...
   नानक से नर असलि खर जि बिनु गुण गरबु करंति॥श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पृष्ठ 1246
3. नीकी कीरी महि कल राखै॥...
   ता कउ राखत दे करि हाथ॥ वही, पृष्ठ 286
4. ईंधन ते बैसंतरु भागै॥...
   सगले साजि करत जगदीसै॥वही, पृष्ठ 900
5. माटी अंधी सुरति समाई॥
   अनद बिनोद चोज तमासे तुधु भावै सो होणा जीउ॥वही, पृष्ठ 100
6. बलूआ के ग्रिह भीतिर बसै॥वही, पृष्ठ 267
7. मिथ्यंत देहं खीणंत बलनं॥...
   पतंति मोह कूप दुरलभ्य देहं तत आस्त्रयं नानक॥वही, पृष्ठ 1354
8. अनिक रसा खाए जैसे ढोर॥...
   जिउ डरना खेत माहि डराइआ॥वही, पृष्ठ 190
9. पेखि पेखि रे कसुमभ की लीला
   राचि माचि तिनहूं लउ हसूआ॥वही, पृष्ठ 206
10. बिनु सिमरन जैसे सर्प आरजारी॥...
    बिनु सिमरन कूकर हरकाइआ॥वही, पृष्ठ 239

11.संतन कै दूखनि काग जिउ लवै॥...

संत कै दूखनि त्रिगद जोनि किरमाइ॥वही, पृष्ठ 279

12.दूतन संगरीआ॥ भुइअंगिन बसरीआ॥

अनिक उपरीआ॥वही, पृष्ठ 537

13.हंसा विचि बैठा बगु न बणई नित बैठा मछी नो तार लावै॥...

उडिरआ वेचारा बगुला मतु होवै मंञु लखावै॥वही, पृष्ठ 960

14. माखी राम की तू माखी॥

जह दुरगंध तहा तू बैसिह महा बिखिआ मद चाखी॥वही, पृष्ठ 1227

15. धेनु दुधै ते बाहरी कितै न आवै काम॥वही, पृष्ठ 133

16. मैलागर संगेण निमु बिरख सि चंदनह॥

निकिट बसंतो बांसो नानक अहं बुधि न बोहते॥वही, पृष्ठ 1360

17. ब्रहम गिआनी सदा निरलेप॥...

ब्रहम गिआनी कै नाही अभिमान॥वही, पृष्ठ 272

18.सफल मूरतु सफल ओह घरी॥...

चरण पुनीत चलहि हरि मारगि॥वही, पृष्ठ 191

19.धनु ओहु मसतकु धनु तेरे नेत॥...

रसना राम नाम जसु कहिए॥वही, पृष्ठ 200

20.सचै मारगि चलदिआ

उसतति करे जहानु॥वही, पृष्ठ 136

21.निसि कुरंक जैसे नाद सुणि

हीउ डिवै मन ऐसी प्रीति कीजै॥वही, पृष्ठ 455

22.कोटि बिघन तिसु लागते जिस नो विसरै नाउ॥

नानक अनदिनु बिलपते जिउ सुंञै घरि काउ॥वही, पृष्ठ 522

23.फिरदी फिरदी दह दिसा जल पबर्त बनराइ॥

जिथै डिठा मिरतको इल बहिठी आइ॥वही, पृष्ठ 322

24.पहिरै बागा करि इसनाना चोआ चंदन लाए॥

निरभउ निरंकार नही चीनिआ जिउ हसती नावाए॥वही, पृष्ठ 213

25.बूडत कउ जैसे बेड़ी मिलत॥...

जैसो दानो चकी दराहि॥वही, पृष्ठ 986-987

26.न संखं न चक्रं न गदा न सिआमं॥...

ऊच मूच अपार गोबिंदह॥ वही, पृष्ठ 1359

27. तूं जलिनिध हम मीन तुमारे॥

तेरा नामु बूंद हम चात्रिक तिखहारे॥वही, पृष्ठ 100

28. मिलि संतसंगित आराधिआ हरि घटि घटे डीठा राम राजे॥...

पि्उ सहज सुभाई छोडि न जाई मनि लागा रंगु मजीठा॥वही, पृष्ठ 453

29. तूं पेडु साख तेरी फूली॥...

तूं सूतु मणीए भी तूंहै॥वही, पृष्ठ 102

30.एकै कनिक अनिक भाति साजी बहु परकार रचाइओ॥

कहु नानक भरमु गुरि खोई है इव ततै ततु मिलाइओ॥वही, पृष्ठ 205

31.प्रियु प्रियु नामु तेरा दर्शन चाहै

जैसे द्रिसटि ओह चंद चकोरी॥वही, पृष्ठ 208

32.जल दुध निआई रीति अब दुध आच नही मन ऐसी प्रीति हरे॥

अब उरिझओ अलि कमलेह बासन माहि मगन इकु खिनु भी नाहि टरै॥वही, पृष्ठ 454

33.नदी तरंदड़ी मैडा खोजु न खुमभै मंझि मुहबति तेरी॥

तउ सह चरणी मैडा हीअड़ा सीतमु हरि नानक तुलहा बेड़ी॥ वही, पृष्ठ 520

34.हरि सेती मनु बेधिआ मेरी जिदुड़ीए

जिउ बालक लगि दुध खीरे राम॥वही, पृष्ठ 538

35. लाल रंगु तिस कउ लगा जिस के वडभागा॥

मैला कदे न होवई नह लागै दागा॥वही, पृष्ठ 808